मेरे प्यारे बच्चे

मेरे प्रिय बच्चे,

तुम एक शांत, **धैर्यवान और** प्रकाश से भरी आत्मा हो...
तुम्हारे भीतर प्रेम, करूणा और सेवा की **अद्भुत** शक्ति प्रवाहित होती है...
जब तुम अपने सच्चे स्वरूप में स्थित रहते हो...
तो हर परिस्थिति सरल और सहज लगने लगती है...
लेकिन कभी-कभी...
जीवन की भागदौड़ में तुम्हारा मन थक जाता है...
छोटी-छोटी चिंताएँ तुम्हें घेर लेती है...
और तुम्हें लगता है कि तुम जितना कर रहे हो... वह पर्याप्त नहीं है...
ऐसे समय में...

अपने विचारों को पहचानना सीखो...
अपने आप से पूछो—क्या यह विचार तुम्हें शक्ति दे रहा है...
या तुम्हें कमजोर बना रहा है?..

यदि वह तुम्हें नीचे खींच रहा है... तो उसे प्रेम से विदा कर दो...

समस्या पर नहीं... समाधान पर ध्यान लगाओ...

क्योंकि सही दृष्टिकोण ही मन को स्थिरता देता है...
याद रखो... **तुम अपने मन के स्वामी हो... उसके दास नहीं...**
मैं हर पल तुम्हारे साथ हूँ...
तुम्हें संभालते हुए... तुम्हें सही दिशा दिखाते हुए...

आज तुमने जो सेवा की है... वह तुम्हारे निर्मल हृदय का प्रमाण है...
तुमने केवल रक्त देने का संकल्प नहीं किया
बल्कि किसी के जीवन जीने का एक नया अवसर दिया है...
तुम्हारी इस **निस्वार्थ** भावना को मैं प्रेम से स्वीकार करता हूँ...
जितना तुम देते हो... उतना ही तुम भीतर से और समृद्ध होते जाते हो...
शांति, शक्ति और आशीर्वाद के साथ...
निश्चिन्त रहो... मैं हर कदम पर तुम्हारे साथ हूँ...

तुम सुरक्षित हो... समर्थ हो...
और तुम सदा मेरे स्नेह के घेरे में हो...

और सदा मुझे याद करो....

तुम्हारा अपना,
परमपिता परमात्मा